मनुष्य बनो

12/81

बा० मू० ७-००

रणा गति

शुभ संकल्प,

क्षमा,

प्रेम,

निष्काम कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

क
याल फकीर चन्दजी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ७—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र. ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

R. S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं: पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष ३२	पौष सं० २०३८ वि० दिसम्बर १९८१	संख्या २

गुरू का रूप

हम गुरु के गुरु हमारे, हम गुरू के रूप हैं ।
हम गुरु हैं हम हैं चेले, हम परजा हम भूप हैं ॥
हम हैं पृथ्वी हम परमाणु, हमही कंकर मिट्टी हैं ।
हम हैं जल जल के परमाणु, हमही जल के कूप हैं ॥
हम चमक हैं हम दमक हैं, ज्योति और प्रकाश हम ।
चांद सूरज हम हैं, हम ही चांद और धूप हैं ॥
नाम हम बेनाम हम, देह हम हम आत्मा ।
रूप सब जग के हैं हम, आप ही बहु रूप हैं ॥
आपको तुम आप जानो, नहीं किसी से वास्ता ।
राधास्वामी ने बताया, भेद हम निज रूप का ॥

—०—

सच्ची माता कैसी होती है

एक नगर में दो स्त्रियां एक लड़के के लिये झगड़ रही थी। मामला जिस्ट्रेट की कचहरी में पहुँचा। दोनों ही अपना २ हक लड़के पर इस रह बयान करती थीं कि मजिस्ट्रेट सा० भी अपनी मजिस्ट्रेटी भूल गये। स्त में हार कर उन्होंने अपनी घर वाली से इस मामले में राय ली। जो उ नगर के भाग में अपनी चतुराई को बहुत प्रसिद्ध थी और अड़ोस पड़ोस उसका बहुत मान था। उसने थोड़ी देर इस मामले पर विचार किया र कहा नौकर से बच्चे के बराबर के कद की एक मछली मँगवा दीजिये। उसी समय मंगा दी गई। फिर बच्चे को अपने पास मंगा लिया। और दोनों स्त्रियों को बाहर के कमरे में बुलवा लिया। मजिस्ट्रेटिन ने लड़के कपड़े उतार कर मछली को पहना दिये और नौकर को आज्ञा दी कि दोनों ियों के सामने लड़के को दरिया में फेंक दे। नौकर ने आज्ञा का पालन ा। मछली पानी में फेंक दी गई। वह उसमें उछलने लगी। और कपड़े ारण तड़पड़ाने लगी। इसका प्रभाव स्त्रियों पर क्या पड़ा? एक तो ाप बैठी देखती रही, दूसरी चिल्ला कर निडर होकर पानी में कूद पड़ी से बच्चे की जान बचे। मजिस्ट्रेट की पत्नी ने कहा देखो यह ही बच्चे असली मां है। उसको पानी से निकाला गया मजिस्ट्रेटनी की बड़ी फ हुई। उसने बच्चे को अच्छे खूबसूरत वस्त्र और मिठाई देकर उसकी के हवाले किया जो दुआयें देती हुई अपने घर गई।

—०—

नेक पत्नी

वह मर्द अकसर भूले हुये हैं जो अपनी स्त्री की कदर नहीं करते। उसकी प्रेम भरी बातों का अनादर करते हैं। स्त्री स्वाभाविक ही पुरुषों से अधिक चतुर, दूरदर्शी और प्रेम प्रगट करने वाली होती हैं। इसकी चतुराई को मर्द नहीं पहुँच सकता।

"स्त्री चरित्रम पुरुशष्य भाग्यम् दैवो न जानात् कितो मनुष्यः"

अथवा स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाग्य को दैव भी नहीं जानता तो मनुष्य की क्या हस्ती है ?

सूक्ष्म बुद्धि और पवित्रता के साक्षात रूप ! तू सचमुच संसार में पूजा और सम्मान के योग्य है ! यदि तू न होती तो संसार का क्या हाल होता ? भय, अपवित्रता, पशुपन और व्यभिचार के दृश्य चारों ओर नजर आते। तू वास्तव में ऐसी देवी है जो समाज के चाल चलन और रीति रस्म में सहूलियत, मुलामियत, सुन्दरता और पवित्रता पैदा करती है। क्रोध में मनुष्य पशु बन जाता है। पर जहाँ सुलक्षण स्त्री की जादू भरी प्रेम की दृष्टि उस पर पड़ी नहीं कि वह फौरन संभल बैठता है। मर्द लाख कहें कि औरतों की बात न मानें। पर स्त्री अपनी किसी न किसी युक्ति से उसको अपने आधीन बना कर उसको सद राह पर ले आवेगी। कौन सा मर्द है जिसको कभी मोका पड़ने पर अपनी स्त्री की चतुराई देखकर झपना न पड़ा हो। कोई माने या न माने जो २ अच्छी घटना यहां पर कभी २ घटती हैं उनमें अधिकांश स्त्रियो की सम्मति का ही परिणाम है। कभी माता के रूप में बच्चों के दिमाग में आगामी मान बड़ाई के बीज बोती है। कभी बहन बन कर भाई को वीर और उत्साही बनने का संचार करती है। पत्नि के रूप में घर को स्वर्ग धाम बनाती हुई पति को धर्म के मार्ग पर कायम रखना इसका देवी का काम है। और फिर पुत्री के रूप में अपनी सादगी और तोतली जुबान से किस कदर

ाता पिता को मुग्ध करती है। कुंआरे मर्दों को देखो वह जन्म भर दुखी हते हुये जान देते हैं। स्त्रियों के नेत्र बड़े तेज, चित्त उदार, और ामाग, बड़ा विवेक विचार वाला होता है। चालाक से चालाक मर्द भी त्री की तेज समझ पर विजयी नहीं हो सकता। जो मर्द अपनी नेक स्त्री से म्मति लेकर काम करेगा वह कभी दरिद्रता का शिकार न बनेगा। इसलिये मारा फर्ज है कि इस सम्बन्ध में हम विचार से काम लेना सीखें जिससे मारा लोक व परलोक दोनों का सुधार हो ?

मालिक सद्बुद्धि दे कि हम सद्मार्ग को ग्रहण करें।

—o—

भूल सुधार

गत माह नवम्बर के "मनुष्य बनो" पत्रिका के पृष्ठ ३५ पर रम सन्त परम दयाल हुजूर पं० फकीर चन्द जी महाराज के निज र जाने पर "श्रद्धांञ्जलि" डा० योगराज शर्मा (होमियोपैथ), न्डीगढ़ ने लिख कर भेजी थी। गलती से डाक्टर साहब का नाम लेखना रह गया था। कृपया पाठक गण क्षमा करें।

—o—

प्रवचन

परमसन्त परम दयाल पंडित फकीरचन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर

१९—७—८१

कब गुरु मिलिहौं सनेही आइ।

लोभ मोह को जार वनो है, ता में रह्यो उरझाय,
जाकी सांची लगन लगी है, सो वा घर को जाइ।
सुरत समानी शब्दकुंड में, निरत रही लौ लाइ,
पिया बिना यों प्यारी तड़फै, तड़फ तड़फ जिय जाइ।
चलो सखी वा देसे चलिये, जहाँ पुरुष को ठांइ,
हंस हिरंवर चँवर ढुरत है, तन की तपन बुझाइ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, शब्द सुनो चित लाइ,
नाम पान पाँजी जो पावै, सो वा लोके जाइ।

आप लोग गुरु पूर्णिमा के सिलसिले में आये थे। मैं अपने आप से पूछता हूँ फकीरचन्द ! तू ने यह क्या पाखण्ड का जाल बना लिया ? जीवन किसी खोज में बीता व बचपन से सोचा करता था कि प्रीतम को मिलूँगा, राम को मिलूँगा। अब जीवन ने पलटा खाया। मैं क्या कहना चाहता हूँ ? न कोई राम मिला, न कोई कृष्ण मिला और नहीं कोई गुरु मिला। मेरा स्वयं का मन ही गुरु वनता था वही शिष्य बनता था, वही राम बनता था वही कृष्ण बनता था। यही मेरी समझ में आई। जो बात मैंने कही वह प्रत्येक व्यक्ति समझ नहीं सकता जब तक कि वह स्वयं न दौड़े। और जो

मैंने कहा, वही कबीर साहिब तथा स्वामीजी ने भी कहा कि
प्रीतम के लिए मैं सारा जीवन भटकता रहा कि मुझे राम
जाये, मुझे यह मिल जाये, मुझे यह मिल जाये। बहुत कुछ
परन्तु पहुँचा कहां ? जहां न राम है, न रहीम है, न करीम है,
है, न तू है। एक प्रकार की हालत आजाती है मगर वहाँ तक
जाना चाहता है ? केवल वह जिसको इस बात का विश्वास
या है कि मन रूपी चक्कर में वास्तविक सुख ब शान्ति नहीं है
बिलकुल सत्य बात है।
स्वामीजी ने भी प्रयत्न किया तथा अन्त में वह कहाँ पहुँचे ?
न तो खालिक न मखलूक और नहीं खिलकत नहीं। जहाँ नाम
, सत्तनाम नहीं, अनामी नहीं। कबीर साहिब ने भी यही बात
—

जहाँ पुरुष वहां कछु नाहिं कहें कबीर हम जाना।

मेरे दिल में भी आया कि मैं भी राम की खोज में चला था।
तमाशे देखे मगर जब से मुझे मन व माया के रूप का अनुभव
तो मेरे जीवन ने पलटा खाया। तथा तब मैं मन को छोड़
उस राम को ढूंढ़ने चला। आगे प्रकाश और शब्द है। उसमें
ो ढूँढ़ता हूँ, जो प्रकाश को देखता तथा शब्द को सुनता है।
जाता हूँ तो न हें, न तू। यह अन्तिम अवस्था है।
मगर आप तो संसारी हैं। संसार के चक्कर में आये हुए हैं।
दुनियां चःहते हैं, आनन्द चाहते हैं और प्रसन्नता चाहते हैं।
ो प्राप्त करो। उसके लिये जिसे तुम चाहते हो अपना एक
बनालो जो भी चाह रखते हो वह इच्छा रूप कर मन को
प्र किया करो और अपने आपको उसके समर्पित करते रहो।
ना तुम अपने अन्तर में प्रेम करोगे तुमको उतना ही लाभ होगा
कहीं फकीरचन्द या किसी भी गुरू के पास जाने की आवश्य-
नहीं। वाहरी गुरू वही है जो जीव को अपने अन्तर में ही

॥ मनुष्य बनो ॥

मुक्त [..] छुड़ा कर उसको अन्तर्मुखी

विश्वास करा दे अर्थात जो जीव [..] न्दर है । तू गाफिल (असावधान) कर दे । गुरु १। राम [..] आपको किसी के अधीन करके पूजा करता है । होकर बाहरी रूप में जीव को पता [..] दर-दर भटकते न फिरते । खेद ! यह भ्रमयुक्त है कि अन्तर नहीं ठहरता । सन्तों के मार्ग में पूर्ण मगर मन हुआ है कि सतगुरु या मालिक का विश्वास उनके अन्तर करा गुरु एक व्यक्ति के अन्तर रहता ।

घर में घर दिखलाय दे, सो सतगुरु पुरुष सुजान ।

सत्य बात तो यह है कि मैं गुरु आदि कुछ नहीं । गुरु तो ज्ञान और समझ का नाम है । सतगुरु सच्चे ज्ञान का नाम है । वही मैं आपको बताता हूं । मैं आप लोगों की आंखों में धूल डालना नहीं चाहता और न ही अपने जाल में फंसाना चाहता हूँ । पूर्णतया सत्य बताता हूँ कि जो कुछ तुमको मिलता है, मिलेगा या मिल चुका है वह आपका अपना कर्म है । अपने कर्म को ठीक करो । इस विश्वास में मत रहो कि तुम बाबा फकीर या किसी गुरु या राम की माला फेरते हो तो तुम्हारा कल्याण होगा । नहीं होगा । मैंने देखा कि जब हर धर्म वाले ये बड़े २ महात्मा और सन्त भी कष्टों से नहीं बचे त सिद्ध हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने कर्म का फल मिलता है । इ लिये ऐ मानव ! राम नाम बेशक तू न जप, तू अपनी नीयत को साफ रख अपने स्वार्थ के लिए किसी के साथ धोखा, फरेब, चारसोबीस तथा हेरा मत कर यह मेरी समझ में आया है ।

मैंने यह काम बड़े दर्द दिल से किया है । सत्य पूछते हो हम उ समझते हैं कि हमको देवी देती है, कृष्ण देता है, गुरु देता है यह स नहीं देता । जो कुछ किसी को मिलता है यह उसका प्रेम है, अ विश्वास और अपनी ही श्रद्धा है । उसी का फल मिलता है । अ प्रतिदिन अपने अनुभव सुनाता हूं । पत्र आते हैं, लोग मेरे रूप का ध्य हैं, मांगते हैं, मेरा रूप उनकी सहायता करता है । इस प्रकार

विश्वास से ले लेते हैं मेरे तो बाप ... भी मालूम नहीं हो...
...हीं जाता हूं। मैं यह वह भेद ... ...
...रुओं ने, इन महात्माओं ने, इन धर्म ... न ...
...ानता में रखकर हमारे हमसे बड़े परि...
...चों का पेट काट कर दिया, उसके ...
...स्थियों के अज्ञान का अनुचि...
...ा। मैं स्वयं लुट...
...ो मेरा ढाई...

ऐसी हालत थी लेकिन जब शरीर को कोई विशेष कष्ट होता है तो नानी याद आ जाती है। सुरत नहीं चढ़ती। अन्य सन्तों का मुझे पता नहीं।

मैं किसी को चेला नहीं बनाना चाहता तथा न ही मैं चाहता हूं कि कोई मुझे पूजे। मुझे गरज (स्वार्थ) नहीं है। मैं आपको सरल ढंग बताना चाहता हूं कि कुछ न करो। मैं क्या करता हूं? कुछ भी नहीं। पहले बहुत किया। मैं भी परिश्रम करते २ मर गया। अब तो यही कहता हूं—शरणागतम।
अतः जो व्यक्ति इस मार्ग पर सच्चा होकर चलता है बेशक वह यह नि...
करे कि उसका शब्द खुला हुआ है या नहीं। ज्यों २ उसका मन ...
करना बन्द कर देगा तो अपने आप ही उसका शब्द खुल ... नहीं।
अपने अन्दर सच्चे होकर चलोगे और प्रेम करके ...मालिक की
समाप्त हो जायेगा। जब मन समाप्त हो जाये...
और शब्द आ जायेगा। इसमें परिश्रम का सच्चे बनो बिलकुल
आपको सरल उपाय बता दिया लेकि पहले अपने मन को सच्चा
दया है वह ही इसे समझ सकत परवाह नहीं। अब अकेले बैठो
... को देखकर अपने आपको उसके

देखो, आज मैं आ...पवित्र नहीं हैं मानव के मन के अन्दर
कुछ न करो। मैं... कानों में उंगलियां डाल कर मर जाओ ...
बनाओ, बस...म्हारे मूर्ति या रूप आयेगा। ज्यों २ तुम सच्...
अपने ... मैल दूर हो जायेंगी। तुम दस व्यक्तियों में बैठ...
... तुम्हारी मैल नहीं जायेगी। अपने मकान में अके...
... तुम सच्चे बनो. प्रकृति तुम...

...च
...ही (
...है ? ।
...के जो इ...
...म राम क...
...वे कट नहीं
...है कि वह

पत्र आते है । कबीर साहिब अपने शब्द में यही कहते हैं—

कब गुरु मिलिहो सनेही आइ,
लोभ मोह का जार बनो हे, ता में रह्यो अरुझाय,
जाकी साची लगन लगी है, सो वा घर को जाइ ।
सुरत समानी शब्द कुंड में, निरत रही लौ लाइ ।
पिया बिनु जू प्यारी तलकै तलकै तलकै जिय जाइ ।

अब यदि कबीर होता तो मैं पूछता कि किस पिया को यह सन्त कहते हैं । मैं भी कभी पिया को मानता था । यह अज्ञान था । अरे ! प्रीतम तुम्हारा अपना ही आप है कोई दूसरा नहीं, यह हमको भ्रम जल्दी नहीं जाता । क्यों नहीं जाता ? मन के अन्तर जो विचार हैं जब तक यह साफ नहीं होंगे या भ्रम नहीं जायेगा । इसलिए यह जितना अभ्यास, सहसदल कमल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, भँवर गुफा इत्यादि है यह सब मन को निर्मल करने के लिए हैं तथा यह मन की ही अवस्थाएं हैं । सहसदलकमल में भिन्न-भिन्न प्रकार के ख्यालात मन से निकलते हैं । त्रिकुटी में केवल अपने इष्ट के साथ प्रेम रह जाता है । जब प्रेम अधिक हो जाता है तो वही मन साफ होता हुआ अनेकवाद को छोड़ कर त्रिकुटी वाद, द्वैत बाद और अद्वैत वाद को छोड़ २ कर इकट्ठा हो जाता है अर्थात् एक जगह ठहर जाता है । जब एक जगह ठहर जाता है फिर जब व्यक्ति प्रयत्न करता है तो मन छूट जाता है और आगे प्रकाश और शब्द है, शेष तुम्हारी जात रह जाती है । यह परमार्थ है ।

आप लोग आ गये हैं । आज अन्तिम सत्संग है । मैंने आपको बहुत कुछ कह दिया । पहले संसार के मोह को छोड़ो । इस संसार में रहते हुए यदि संसार में फंसोगे तो दुःख उठाओगे । एक व्यक्ति आया हुआ है उसका लड़का नालायक है वह बहिन को मारता है, माता पिता को भी मारता है । फिर वो कहते हैं कि पुत्र घर वापिस आ जाये । रात मेरे पास आया । मैंने कहा— इस पर धिक्कार है । ऐसी सन्तान को क्या करोगे । जो सन्तान आज्ञाकारी

नहीं, उसको विष देकर मार दो। हम लोग मोह माया में फँसे हुए हैं। हाय मेरा बेटा, हाय मेरा बेटा। वह सोना जो कानों को दुखाता है उसे मत डालो। पहले अपने मन की शान्ति है। मगर हम लोगों को माया ने इतना दबाया हुआ है जिसका कोई हिसाब नहीं। मोह में फँसे हुए हैं।

हम लोग दुनिया में फँसे हुए हैं। तो गुरु क्या करता है? बाहरी गुरु का क्या कर्तव्य है? तुमको सच्चाई बता करके तुम्हारे मन को इस चक्कर से निकाल देने की आवश्यकता है, और कुछ नहीं मैं भी यही करता हूँ। किसी के साथ मोह न करो। अगर तुमने बच्चों का मोह छोड़ कर के मेरे साथ मोह कर लिया तो क्या अन्तर है। किसी ने पुत्र के साथ, किसी ने गुरु के साथ मोह किया। मेरी बात को सोचो। कोई पुत्र के मरने पर पुत्र के मोह में रोया, कोई पत्नी के मरने पर रोया, कोई गुरू के मरने पर रोया। अन्तर क्या है? सोचो! एक प्रसिद्ध सन्त की मृत्यु हुई तो कितने व्यक्तियों ने आत्म-हत्या करदी। उन व्यक्तियों का मृत्यु का जिम्मेवार कौन है? उस परम सन्त ने जनता को साफतौर से क्यों नहीं कहा—कि गुरू शरीर नहीं है। मेरा जीवन चार दिन का है। मैं तुम लोगों को फकीरचन्द के जाल में नहीं फँसाना चाहता। फकीरचन्द के जाल में फँसना, फसाना गलत है। मेरी बात को सोचो कि मैं क्या कह रहा हूँ। मैं तो कहता हूँ कि जब मैं मर जाऊँ तो आप नाचो। मोह सबका है। गुरू का मोह इतना ही है कि गुरू के सत्संग में बैठ कर उसकी बात को सुना कर उस पर अमल करना यह गुरु का मोह है। और वास्तव में वास्तविक गुरू का मोह तुम्हारे अन्तर में है। वह गुरु जिस से तुमने मोह करना है, वह शब्द रूप तुम्हारे अपने अन्तर है तुम्हारा अपना आपा है। मैं संसार को धोखा देना नहीं चाहता और यह नहीं कहता कि फकीरचन्द को पूजो।

लोभ मोह का जार बनो है, ता में रह्यो उरझाय,
जाकी साँची लगन लगी है, सो वा घर को जाइ।

इसकी बाबत मैंने आपको बता दिया। यही मेरा अपना अनुभव था। चूंकि कबीर साहिबजी ने भी यही कहा, अन्त में प्रसन्न हूँ कि मेरे जीवन का अनुभव उचित है। करना कुछ नहीं यदि अभ्यास नहीं बनता तो कोई परवाह नहीं। अकेले बैठो। अपने हृदय में सच्चे दिल से अपने आपको उस परमतत्व के अर्पित करदो जो त्रुटियाँ आपने की हैं उनको स्वीकार करो। जहां तुम्हारा मन साफ हुआ प्रकृति तुम पर स्वयं दया करेगी। बस, यह **Law** ब नियम है और कुछ नहीं। जब मनुष्य सच्चा होकर पुकार करता है तो उसके मन के अन्दर **Vaccum** हो जाता है और प्रकृति की दया उसे आकर पूरा करती है! मगर यह चमत्कार या काम उनके होते हैं जिनके मन निर्मल होते हैं अतः मन की पवित्रता बहुत आवश्यक है। यह बात है। मैं सोचता हूँ कि क्या तुम मेरे पास से कुछ ले जा सकते हो? हाँ, ले जा सकते हो। मेरे पास से तुम अज्ञान अर्थात भ्रम दूर कर सकते हो। किसी सीमा तक जब तक बैठे रहोगे शान्ति मिलेगी। मगर जब तुम दूसरे व्यक्तियों से जाकर मिलोगे तो वह शान्ति भंग हो जायेगी। मेरे जीवन की यह **Research** है। मेरी समझ में यह आया है कि संगति के प्रभाव का नियम **Law of Radiation** काम करता है। सच्च पूछते हो। मैं कहता हूँ कि आप सतसंगी लोग मेरे शत्रु साबित हुए। यह मैं दर्दे दिल से कह रहा हूं। आपने जान-बूझ कर शत्रुता नहीं कि बल्कि प्रेम किया। लेकिन मेरे लिए वह हानिकारक बैठा। चारसौबीस, गन्दे धोखेबाज जब आकर मुझे जफ्फी मारते हैं, मेरे पांव को हाथ लगाते तथा दबाते हैं, अगर मेरी रेडियेशन तुम को जाती है तो क्या तुम्हारी रेडियेशन मुझे नहीं आती? मैं इसे अनुभव करता हूँ। काश! अगर संगति का यह प्रभाव मुझे पहले पता होता तो मैं कभी सत्संग न

कराता । अब मैं कैसे बचता हूँ । इससे बचने का क्या उपाय है ?
क अपने स्वार्थ के लिए किसी से कुछ आशा नहीं रखता । फिर मुझे
कोई दोष नहीं । अतः मैं आपसे किसी से भी प्यार नहीं करता ।
I लड़के लड़की से ही प्यार करता हूँ । क्योंकि यदि मैं तुमसे प्यार
करूँ तो तुम्हारे ख्यालात का प्रभाव मेरे ऊपर आयेगा । मगर
तुम्हारा प्रभाव तो मेरे ऊपर तब आयेगा जब मैं तुमसे प्रेम करूँगा
और प्रेम स्वार्थ के लिए ही करूँगा । अतः मैं कोई गरज (स्वार्थ)
ो नहीं रखता । हां, तुम्हारे प्रेम के बदले मैं तुमको निष्काम प्रेम
ा उत्तर देता हूं । प्रेम करता हूँ मगर दिल नहीं देता । यह मेरी
मझ में आया है । जीवन के अनुभव ने मुझे यहां पहुँचाया है । मैं
ऐसे करता हूँ । पृथ्वीनाथ ! गुरू बनना सरल नहीं है । इस संगति
के प्रभाव से बड़े बड़े महात्मा गिर गये । ऐ गुरुओ ! ऐ महात्माओ !
अपनी नीयत को साफ रख कर अपने आपका साधन करके, अपने
आपको ठीक करके सत्संग कराया करो । क्योंकि जैसे तुम होगे
आपकी रेडियेशन लोगों पर जायेगी जब सत्संग कराते हो तो तुम्हें
सोचना चाहिए कि तुम्हारा मन कहाँ हैं **Law of Radiation** है
यह काम करता है । यदि ऐसा न करोगे तो तुम्हारे कारण लोगों
के जीवन खराब हो जायेंगे । हिन्दू शास्त्रों और हमारे हिन्दुओं का
मसला था । किसी का खाना नहीं खाते थे यह कोई घृणा नहीं थी
बल्कि इसका वास्तविक अर्थ यह था कि दूसरे व्यक्ति के जजबात
ाल नहीं खाते थे ताकि छूत से व्यक्ति के मन के अन्दर परिवर्तन न
आजाये, वास्तविक नियम तो यह था कि प्राचीन समय की औरतें
अपने पति के बिस्तर के सिवाय दूसरे के सिवाय दूसरे के बिस्तर
पर नहीं सोती थी क्योंकि जो जैसा है उसके अन्दर से वही निकलना
। यही **Low of Radiation** का नियम प्रसाद लेने में भी काम
करता है । दो वस्तुओं के मिलने से एक का प्रभाव अन्तर से जो
ख्यालात निकलते हैं वह दूसरे पर जाते हैं । दूसरे के दूसरे पर जाते

हैं। दूसरे के दूसरे पर जाते हैं। अतः जब तक कोई व्यक्ति अपने घर में एक विचार वाले नहीं हैं, प्रेम नहीं है, शान्ति नहीं है, भिन्न-भिन्न स्वभाव है तो जब तुम घरों में रहोगे तुमको कष्ट होगा। तुम्हारे घरों में झगड़ा होगा। यही उपनिषद भी कहती है कि एक ओर मुँह करके चलो, एक कदम होकर चलो। तो जिस घर में भिन्न भिन्न ख्याल हैं अर्थात किसी का कोई ख्याल है किसी को कोई ख्याल है वहां शान्ति कैसी। दुनिया मेरे पास शान्ति के लिए आती है। शान्ति कैसी ? गुरू यानी ज्ञान और समझ देता है। तुम गृहस्थी हो, तुमको गृहस्थ का पाठ देता हूँ। विषय विकार कम करो, अच्छी सन्तान पैदा करो। मन को चारसौ बीस व हेराफेरी मत करने दो नवयुवकों को मैं कहना चाहता हूँ कि अपनी छोटी आयु से अपने ब्रह्मचर्य का पालन करो। घरों में शान्ति रखो, बेकार मत रहो। अपने स्वार्थ के लिए किसी के साथ धोखा मत करो। यदि ऐसा करोगे तो तुम्हारा मन छलांगें लगायेगा कभी इधर कभी उधर, अभ्यास नहीं बनेगा। ऊपर नहीं जा सकोगे। क्योंकि तुम्हारा मन शान्त नहीं होगा **Waver** करेगा। **Be true yourself** अर्थात अपनी आत्मा को सच्चा करो। यदि तुम इतना भी कर जाओ तो परमार्थ तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं रखता। कोई आवश्यकता नहीं। हमारा मन चंचल है, खराबी करता है इसलिए हम दौड़ते हैं, सहारा चाहते हैं। सहारा लो। मैं नहीं चाहता कि मेरा आश्रय लो। जिस रूप में तुम्हारा विश्वास है कहीं भी जाओ, हिन्दू बनो, मुसलमान बनो इसकी मुझे कोई परवाह नहीं। मैं तो धर्मों के चक्कर से निकल गया। तुम लोग आते हो। मैं जिम्मेवारीं अनुभव करता हूँ। मैंने आपको सच्चाई बता दी। गुरु की ड्यूटी क्या है ? सच्चाई बताना, ज्ञान देना, रास्ता बताना। वह मैंने आपको बहुत कुछ स्पष्ट कह दिया। दुआ करो अगली गुरू पूर्णिमा मुझे न आये। मुझे इस संसार से उपराम होगया है। कब तक जीऊँगा। ९५ बर्ष को

ायु होगई। मगर पिछले किये हुए कर्म भोगने पड़ते हैं। तुम लोग ाज जारहे हो, मैं भी अमेरिका जारहा हूँ। जीवित रहा तो ाऊँगा। क्या पता है।

———

प्रवचन

परम दयाल परम सन्त पं० फकीरचन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर

१०–१०–८०

संतमत मारग झीना है, हां।
त्याग स्थूल सूक्ष्म गति निरखे, फिर कारन की बारी।
कारन तज महा कारन धावे, तब समझो अधिकारी।
धरम करम व्यौहार न छोड़े, ढूंढे सार न इनमें।
सुरत शब्द में सार छुपा है, करे प्रताप सो तिन में।
संजम नियम जप तप कर्मा, नहीं किंचित कठिनाई।
सहजयोग की सहज रीति है, सहज ही सहज भलाई॥
सतगुरु सत्त नाम सतसंगत, समझ समझ में धारे।
फिर अन्तर में कर चढ़ाई, जड़ चेतन निरवारे।
राधास्वामी ने भेद बताया, सुरत शब्द मत गाया।
सुरत शब्द मत सबका टीका, सुरत में शब्द को पाया।

राधास्वामी।

यह शब्द मेरे गुरु महाराज दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलालजी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

का है इसमें वो लिखते हैं कि संतमत का मार्ग बहुत झीना यानी बहुत सूक्ष्म है। मैंने सोचा वह मुश्किल क्या है मैं इसको अपने तजुर्वे से व्यान करके आसान कर देना चाहता हूँ।

मैं हमेशा कहा करता हूँ कि मैं स्वयं तो इस पंथ में आया नहीं, अगर मैं स्वयं राधास्वामी मत में आने से पहले इस मत की पुस्तकें पढ़ता तो मैं कभी इस मत में न आता। क्योंकि उन्होंने हिन्दुओं, मुसलमानों वेदान्तियों आदि सब का खण्डन किया है किसी को नहीं छोड़ा। उस समय किस्मत मेरी इस संतमत में मुझे लेगई, तो मैंने प्रण किया था कि मैं अपना अनुभव कह जाऊँगा।

मैं सोचता हूँ यह मार्ग सूक्ष्म कैसे है। जिस सार शब्द को पकड़ने के लिए संत उपदेश करते हैं इसके लिए पहले इन्सान को मन के ख्यालात के एकाग्र करना पड़ता है फिर इन ख्यालात को छोड़ना पड़ता है। ख्यालात को छोड़ने के बाद फिर प्रकाश आता है फिर प्रकाश को छोड़ना पड़ता है फिर आगे जो शब्द आता है वो कहते हैं कि जब आदमी उसको पकड़ता है तब वो संतमत की वास्तविक व ऊँची समझ का अधिकारी होता है। अब मैं सोचता हूँ कि यह ठीक है मगर प्रत्येक मजहब या पंथ वालों ने लोगों को अपनी तरफ खींचने के लिए रोचक व भयानक बातें कही हैं। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ फकीरचन्द ! तू जो लोगों को उपदेश करता फिरता है तुमने सुरत शब्द योग का अभ्यास किया है इसका परिणाम क्या निकला, वहाँ पहुंच कर तुमको क्या मिल गया ? मेरे अन्दर एक हालत पैदा होगई जिसने कहने सुनने सोचने समझने या चिन्ता फिक्र या गम करने की आवश्यकता अब महसूस नहीं होगी। कोई ऐसा ख्याल नहीं आता कि परमात्मा है या नहीं न यह ख्याल ही रहता है कि मैं जीवित हूँ या मृतक हूँ या मेरा कोई है या नहीं एक ऐसी हालत हो जाती है। अब तुम ही बताओ इस हालत को कौन चाहता है ? दुनियादार तो दुनियां और मन के आनन्द व खुशी पुत्र,

जत और मान चाहते हैं। इसलिए यह सन्तों का मार्ग केवल
हीं के लिए है जिसको यह एहसास हो चुका है कि मन के चक्र में
त्र नहीं है और वह मन के इस ससार से उपराम होकर शान्ति
सुख की खोज करते हैं यह मेरा तजुर्बा है जो आदमी इस मार्ग
: जाना चाहते हैं उनको क्या करना चाहिए ? उनको चाहिए कि
; सबसे पहले अपने मन को एकाग्र करे। जो तरह तरह के ख्याल
र विचार उनके मन में उठते रहते हैं उनको सुमिरा यानी अजपा
प बताया जाता है। तुम हिन्दू हो राम राम से करो, मुसलमान
अल्ला हू से करो, सिक्ख को वाहेगुरू से करे, राधास्वामी हो तो
धास्वामी से करो, पंचनामी हो तो पांच नाम से करो अभिप्राय
ह है कि जो भी तुम्हारे अपने अपने मजहब या गुरु ने तुमको शब्द
या है (मैं इन झगड़ों में नहीं पड़ता) उसे लम्बा लम्बा करके
मिरन करो ताकि तुम्हारे मन की वृति दोनों भोंहों के मध्य में
रे। जो व्यक्ति इस तरह लम्बा लम्बा करके अजपा-जाप करता
उसको क्या मिलता है ? उसके मन की चंचलता दूर होती है और
क प्रकार का आनन्द मिलता है। मुझे अब भी जब कभी तकलीफ
हसूस होती है, बाहरी विचार आजाते हैं या वातावरण ऐसा हो
ाता है यहां मन विक्षेप करता है तो सुमिरन मेरी सहायता करता
। हालांकि मैं इतना ऊँचा चला गया हूँ मगर जब शरीर में आता
शारीरिक रोग होता है या कोई वाह्य प्रभाव ऐसे पड़ जाते हैं व
ोई नई चीज ऐसी आजाती है तो उस समय मन को कैसे रोकता
? केवल सुमिरन से अपने मन को रोकता और अपने आपको
ान्ति देता हूँ। वह जो ऊँचा अभ्यास मैंने किया हुआ है ऐसी हालत
शान्ति नहीं देता। मानलो कोई मर गया, कोई ऐसी बैसी बात
ागई तो अमल व ज्ञान से शान्ति मिल सकती है मगर खासकर जो
ारीरिक रोग से होता है उस समय कोई और साधन अपने आप
ो बचाने का नहीं है। मैं तुमको अपना भाई समझ कर अपना

तर्जुवा बताता हूँ कि जब भी कोई मुसीवत या कोई चिन्ता फिक्र या अशान्ति तुम्हारे सिर पर आये तो उस समय सुमिरन में लगो और ख्याल के साथ अपने मन को भूमध्य में रोका करो। जब यह होगा तो तुम्हारे मन को शान्ति मिल जाएगी। तो सुरत शब्द से एक तो मुझे यह मिला कि जब कभी मेरा मन अशान्त होता है तो मैं सुमिरन यानी अजपाजाप से अपने मन को भूमध्य में ठहरा होता हूँ और शान्ति प्राप्त कर लेता हूँ। सुरत शब्द योग से मुझे दूसरा लाभ यह है कि जो ब्यक्ति मन को एक स्थान पर एकाग्र करता है चाहे तुम गुरु के रूप से इकट्ठा करो, राम के रूप से इकठ्ठा करो या कृष्ण के रूप से इकट्ठा करो किसी भी रूप से करो, किसी भी मूर्त के रूप से इकट्ठा करो तो क्या हो जाएगा ? तुम्हारे मन की **Will Power** इच्छा शक्ति बढ़ जायेगीं तो जिस प्रकार की तुम्हारी इच्छा होगी वह पूरी हो जाएगी, यह मेरी समझ में आया है। अब इसका सबूत बताता हूँ कि मिसमेज्म वाले जब मिसमेज्य सीखते हैं तो क्या करते हैं ? तो बाहर दीवार पर एक काला गोल निशान बना लेते हैं और उसे देखते रहते हैं जिस समय उनको वह काला निशान चमेली का फूल या सफेद रोशनी दिखाई दे जाती है तो उसमें यह शक्ति आजाती है कि किसी को बेहोश कर देते हैं या और ऐसे कई चमत्कार कर देते हैं। क्यों कर देते हैं ? क्योंकि उनकी मन की बृत्ति एकाग्र हो जाती है तो सन्तों के मार्ग में अपने अन्दर में ध्यान से जो व्यक्ति किसी भी इष्ट का ध्यान करता है कोई देवी का करता है कोई राम का करता है। इन झगड़ों में मैं नहीं पड़ता किसी न किसी रूप का तुम ध्यान करो हम लोग गुरू के रूप का ध्यान करते हैं तो इस रूप के ध्यान करने से क्या हो जाएगा ? तुम्हारे मन की **Will Power** बढ़ जाएगी, जो कुछ तुम चाहोगे, जो तुम्हारी इच्छा होगी वह पूर्ण होती रहेगी यह तजुर्वा मेरा अपना है। और यहां और विदेश में कितने ही हजारों आदमी हैं वह मेरा ध्यान

रते हैं उनके अन्दर मेरी मूर्ति बन जाती हैं वह जिनते हैं बाबा री मूर्ति बन जाती है हमारा यह कार्य होगया, हमारा वह कार्य हो या और बाबा फकीर को पता भी नहीं कि कौन मेरा ध्यान करता तो इससे क्या साबित हुआ ? कि ऐ इन्सान ! जो कुछ है तेरे अपने अन्दर है तू वैसे ही गुलाम बना हुआ है। तू समझता है कि कोई बाहर का आदमी तुम्हें कुछ देता है यह गलत है तुम्हारे अपने ही प्यार की शक्ति से, ध्यान के करने से तुम्हारी इच्छा शक्ति बढ़ जाएगी और अपने जीवन में जैसी इच्छा करोगे उसमें तुम्हारी पूर्ति होने का बहुत सामान मिल जाएगा। कई बार मुझे किसी चीज की आवश्यकता होती है तो स्वाभाविक ही अपने आप आजाती है। लोग हैरान होजाते हैं कहते हैं कि यह क्या होगया।

आपके पास भी दौलत है मेरे पास भी दौलत है आप सुमिरन ध्यान का साधन करके देखो। मगर यह साधन होगा नहीं जब तक तुम खास खास नियम पूरे नहीं करोगे। पहला नियम यह है कि आपका जो मन है इसको ठीक रखने के लिये आपको शुद्ध कमाई खानी पड़ेगी। जो व्यक्ति जो उसका अपना अधिकार नहीं है वो लेकर खाता है उसका मन कभी साफ नहीं हो सकता। अगर वह कोशिश भी करे तो उससे सुमिरन ही बनेगा और न ही उससे संसार बनेगा। यही कारण है मैंने कह तो दिया कि सुमिरन करो और ध्यान करो मगर मेरे पास पत्र आते हैं कई व्यक्ति बोलते हैं कि हमसे सुमिरन ध्यान नहीं होता। क्यों नहीं होता ? क्योंकि उनका जो वातावरण है जो नियम इसके लिए चाहिये वो पूरे नहीं होते। इसका नियम क्या है ? सबसे प्रथम व्यक्ति की अपनी खुराक शुद्ध होनी चाहिये दूसरे इन्सान को अपना मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य रखने का प्रयत्न करना चाहिये। जो व्यक्ति ज्यादा विषय विकार कमाता है उसके मन में अशान्ति का आना आवश्यक है। न उससे सुमिरन होगा और न ही उससे ध्यान होगा। मेरा स्वयं

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

का भी यही हाल था। १३ वर्ष की आयु में शादी हु
नाम लिया सन १९०५ से १९१७ तक बिना रोने क
नवाने के कुछ नहीं बना क्यों नहीं बना ? क्योंकि मैं गृहस्थ मे फ
गया इसलिए उस समय उस शब्द सुरत योग को प्राप्त करने से पहले मैंने 'मानव बनो' की आवाज उठाई है क्यों ? ताकि जीवों को सचाई का मार्ग मिल जाये। जो नौजवान ब्रह्मचर्य खोते हैं फिर अशान्ति ही उनकी किस्मत में आती है। मैं उनको समझता हूँ मूर्खो ! अपने ब्रह्मचर्य को कायम रखो। जो व्यक्ति अपने ब्रह्मचर्य को गिरायेगा उसको या तो डाक्टर लूटेंगे या मेरे जैसे महात्मा लूटेंगे यह मैं कहना चाहता हूँ कि जब तक यह नियम कायम नहीं है तब तक यह सुरत शब्द योग का भी तुम्हें कोई लाभ नहीं मेरे पास कई स्कूल मास्टर आया करते हैं उनको मैं यही कहा करता हूँ कि वह अपने विद्यार्थियों को उनका **Character Building** बतायें- मन के इकट्ठा न होने का कारण यह भी है कि आर्थिक अवस्था की कठिनाई होती है। इसलिये हर व्यक्ति को पहले अपनी रोजी की ओर ध्यान करना चाहिये मैं नहीं कहता कि तुम राधास्वामी मत में शामिल हो जाओ या राधास्वामी नाम जपो। तुम सुमिरन करो ध्यान करो मगर यह सुमिरन और ध्यान तुम्हारा नहीं बनेगा जब तक कि यह नियम पूरे नहीं होते। ध्यान से क्या मिलेगा ? एक तो तुमको मस्ती आएगी और खुशी मिलेगी जो कुछ तुम्हारे चित्त की बृत्ति के अन्दर **Subconseious mind** में है तो पूरा होगा।

मैं लोगो को नाम नहीं देता। क्यों नहीं देता ? लोग अपने अन्दर बुरे ख्यालात रखते हैं अगर बो ध्यान करेंगे तो जैसी आशायें उनके मन में हैं तो पूरी होंगी क्योंकि उनके दिल के अन्दर गलत ख्यालात हैं यह साधना करने से उनको लाभ की बजाय नुक्सान होगा। यह है विधी। जिस लिए हालाँकि मैं **Degree holder** हूँ

र मैं दुनियां को नाम नहीं देता। क्यों नहीं देता ? क्योंकि एक दमी है उसके मन में नफरत है, द्वेष है एक व्यक्ति कामी है वो म को रोकना नहीं चाहता अभ्यास करेगा ज्यादा कामी हो एगा। एक आदमी लालची है, वो अगर अभ्यास करेगा तो ज्यादा बाज हो जाएगा।

अगर वो आदमी जो बुराइयों को दूर करना चाहते हैं अगर वह यास करे तो उनकी बुराइयां दूर हो सकती हैं। इसीलिए बार कहा जाता है कि गुरु बिन नाम नहीं जपना चाहिए। इसका यह है कि गुरु जो आज्ञा किसी को देता है वही वास्तव में नाम गुरु जो कुछ तुम्हें कहता है उस पर अमल करो इस तरह झ कर मैंने मार्ग सुगम कर दिया है बहुत किताबें पढ़ने की आव-कता नहीं रही आसान तरीका है चलना चाहते हो तो चलो।

जब यह दर्जे पार हो जाते हैं यानी ध्यान बन जाता है तो फिर होता है ? अगर कोई इस मंजिल से आगे जाना चाहता है तो के लिये है केवल प्रकाश व रोशनी। वो प्रकाश हमारे अन्दर प्रकार का है कहीं वह पीला है, कहीं वह नीला है, कहीं वह की तरह है कहीं वह सफेद है। जिस प्रकार की तुम्हारी प्रकृति जिस प्रकार के तुम्हारे ख्यालात है, जो व्यक्ति साँसारिक इच्छा ता है **Grosmatter**, दौलत, सोना, जमीन, पुत्र, मकान इत्यादि इच्छा रखता है जब वह अभ्यास करेगा या जब अभ्यास में एगा उसके अन्दर जैसे दीये की रोशनी होती है ऐसी रोशनी गी क्योंकि उसके मन के अन्दर इस पृथ्वी तत्व की सभी चीजों इच्छा मौजूद है प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर जिस प्रकार की इच्छा सके अनुसार उसके भीतर उस प्रकाश की रंगत पैदा होगी। कि जो रोशनी है वह तुम्हारे अपने ही ख्यालात की है तो ज्यों आपका मन साफ होता जाएगा वासनायें और इच्छायें खत्म जाएगी, ज्यों ज्यों आप अभ्यास करोगे और रोशनी भी सफेद

होती जाएगी। तुम्हारे अन्दर रोशनी पैदा होती है तुम रोशनं. देखते हो अगर तुम्हारे मन के अन्दर साँसारिक इच्छाथें हैं तुम लाख प्रयत्न करो कि तुम्हारे अन्दर सफेद रंग की रोशनी पैदा हो बो नहीं आएगी क्योंकि उस रोशनी ने पैदा होना है जैसी वासनायें तुम्हारे अपने अन्दर है इसलिए जो व्यक्ति शब्द योग के लिए ऊँचा जाना चाहते हैं वो जब तक वासना रहित नहीं है इच्छायें कम नहीं होगी वह वहां नहीं पहुँच सकते फिर क्या करना चाहिए ? सुमिरन है ध्यान है और अपने ख्यालात को पहले शुद्ध करने की कोशिश करो।

हम लोग यह सोचते हैं कि हमें यह मिल जाये, यह मिल जावें देखो दोस्तों। लाख प्रयत्न तुम करो जो कर्म तुमने पिछले किए हुए हैं तुमको वह मिलेंगे अत: आदमी को चाहिए कि कुछ न कुछ किसी की सेवा किसी की सहायता किसी दुखी व्यक्ति को सहारा इस जीवन में करते रहो ताकि अगर दूसरा जन्म तुमको मिले तो जो कुछ तुमने दिया हुआ है उसका तो फल तुम्हें मिल जाये—

सन्तमत मारग झीना है, हां।
त्याग स्थूल सूक्ष्म गति निरखे, फिर कारन की बारी।
कारन तज महा कारण धावे, तब समझो अधिकारी॥

अब स्थूल, सूक्ष्म और कारण यह दर्जे बताये हैं। स्थूल तो हमारे मन में जो संसार की इच्छा रखते हैं वह स्थूल हैं जब हम प्रेम और खुशी के लिए अभ्यास करते हैं यह सूक्ष्म है जब हम अपने अन्दर आनन्द की इच्छा करते हैं यह कारण है। तो यह सत, चित और आनन्द तीन चीजें होगई। जो सन्तों का मार्ग है तो सत, चित आनन्द से आगे है जब तक एक आदमी शारीरिक चित के और रूह के बोध भान को अनुभव नहीं कर लेता वह किसी प्रकार अपने असली घर को नहीं जा सकता इसलिए सत, चित और आनन्द यह तीन हालतें तन की, मन की और आत्मा की हैं।

॥ मनुष्य बनो ॥

'धर्म कर्म, व्यवहार न छोड़े, टूटे सार न इनमें'
वह कहते हैं कि तुम इस मार्ग पर चलो मगर तुम्हारा जो धर्म, व्यवहार है इसे मत छोड़ो। जब तक तुम्हारा जीवन है यह मगर इसमें फँसो नहीं। मैं तो कहता हूँ कोई छोड़ नहीं सकता सन्त हो या परमसन्त हो। क्या यह दुनियां के व्यवहार नहीं ? मैंने यह मन्दिर वना लिया है क्या यह व्यवहार नहीं है ?

सुरत शब्द में सार छुपा है, करे प्राप्त सो तिन में।
दाता ने जो लिख दिया और सन्तों ने भी कह दिया सुरत शब्द। अब जब मैं इन दर्जों से आगे निकल गया तो अब मैं सोचता ; वो सार क्या है ? वो सार यह है कि इन्सान अपने आप को कर सर्व व्यापक हो जाता है यह मेरी समझ में आया है अभ्यास से पता नहीं था कि मैं कहां हूँ, मैं कौन हूँ, क्या मेरा हाल है दे मैं शब्द योग से एक ऐसी हालत तक चला जाता हूँ यहाँ ो अपनी होश नहीं रहती, एक सर्वव्यापकता आजाती है यानी जो है यह कुल में मिल जाता है यह मुझे शब्द योग से मिला है कुछ नहीं मिला है अगर आप इस मार्ग पर सुमिरन और ध्यान ेगे तो तुम्हारी दुनिया बन जाएगी और मन की शान्ति हासिल । मगर हरेक को तो इच्छा नहीं होती कि वह बिल्कुल गुम हो यह हर व्यक्ति का समय होता है एक आदमी इस **Line** का ारी नहीं होता जैसे हम बूढ़े होगये अगर बच्चों को कहो कि ढ़ा हो जायें तो नहीं होगा इस तरह से यह हर व्यक्ति का होता है। तो मैं आपको क्या कहना चाहता हूँ कि सुबह शाम थोड़ा अजपाजाप यानी सुमिरन किया करो। जब तुम्हारा ा ध्यान पक जाये तब फिर आगे जाना। दूसरे अपने मन के बासना यानी इच्छा ठीक रखो अच्छा ख्याल और अच्छी खो किसी से नफरत, द्वेष मत रखो। विषय विकार का यहां तक हो सके कम करो, अपनी संगत अच्छी रखो, घरों

में रहते हो प्रेम और सहानुभूति से रहो तुम्हारा जीवन बदल जायेगा। मैं अपनी जिम्मेवारी को बहुत महसूस करता हूँ मैं सोचता हूँ लोग मुझे प्यार करते हैं, इतना खर्च करते हैं मैं उनको क्या दे सकता हूं ? मैं सत्य प्रिय मानव हूँ मेरे पास सिवाय शुभ भावना या सच्ची बात बताने के दोस्तो और कुछ नहीं जो मुझसे प्यार करते हैं वह मेरे साथ प्यार नहीं करते वो अपने ही मन के साथ मेरी शकल में प्यार करते हैं मेरे साथ कौन प्यार करता है आदमी अज्ञानी है हम किसी के साथ प्यार करते हैं वास्तव में मैं अपने मन के साथ ही प्यार करता हूँ वल्कि शकल दूसरी ले लेते हैं लोग कहते हैं बाबा तेरा ध्यान करने से हमको यह मिल गया। अरे तुम मेरा ध्यान करते हो मैं तो नहीं देता वो तुम्हारे ध्यान की शक्ति तुमको देती है ऐसा स्पष्ट कहने से मेरी आत्मा को शान्ति मिलती है कि मैंने तुम लोगों में से किसी के साथ हेरा फेरी, धोखा फरेव नहीं किया अगर मैं चुप कर जाऊँ और इससे यह प्रभाव दूसरे के मन में बैठ जाये कि हां बाबा फकीर ने हमको यह दिया तो मैं दोषी हूँ, मैं इसकी सजा से बच नहीं सकता अब आप समझे कि नहीं समझे। मैं चाहता हूँ कि आप लोग आजाद हो जायें, किसी के अधीन न रहे पीछे से बाहरले गुरू का एहसान रह जाता है तुमको मेरी माताओं, मेरी बहनों मेरे बुजुर्गो, मेरे बीर व बच्चो जो कुछ मिलना है वो तुम्हारे अपने ही विश्बास अपनी ही श्रद्धा, अपनी ही इच्छा का नतीजा मिलना है किसी महात्मा, गुरू या खुदा ने बाहर से तुमको कुछ नहीं देना। जो कुछ तुमको मिलना है तुम्हारी अपनी ही आशा, अपनी ही चाह, अपनी ही वासना के कारण मिलता है तुम्हारा अपना ही मगर हम समझते हैं कि हमको देने वाला बाबा फकीर है राम या कृष्ण है या देवी देवता है यह विल्कुल झूठ है। मैंने अपना तर्जुवा वता दिया कि लोग मेरा ध्यान करते हैं काम हो जाते हैं और मैं धर्म से कहता हूँ कि मुझे पता

नहीं कि कौन मेरा ध्यान करता है, कौन उनको देता है यह है सचाई जिसे बताने लिए इस फकीरचन्द के चोले में बैठकर बोलता हूँ ताकि जीव अज्ञान में आकर लुट न जाये मैं आप लोगों की आंखों में मिट्टी डालकर आप से धन लेना नहीं चाहता चार दिन का जीवन है किस लिए पाखण्ड गाऊँ मेरे कर्मों को मेरे साथ जाना है तुमने तो मेरे साथ नहीं जाना। अभिप्राय यह है कि मैंने आज आपको बहुत कुछ कह दिया केवल इशारों में नहीं वल्कि विल्कुल स्पष्ट रूप में कि अपने अन्दर में प्रेम करना सीखो गुरु तुम्हारे अन्दर रहता है होशियारपुर या कहीं आसमान में नहीं वल्कि तुम्हारे अन्दर रहता है बाहरी गुरु का यह कर्तव्य है कि वह तुमको यकीन करा दे कि जो कुछ है दोस्त तेरे अन्दर है यही मुझे दाता कहा करते थे जब मैं उनसे ज्यादा प्रेम किया करता था क्योंकि मैं तो बाहरी गुरु महाराज को समझ कर उनके पीछे दौड़ता था तो वो मुझे लिखा करते थे किसलिये पागल होगया है तेरे घट में जो माल खजाना है सब कुछ तेरे अन्दर है तो आप लोग आते हैं बाहर के गुरू की भक्ति यही है जो आप लोग इस समय कर रहे हैं मेरी बात को सुनो और समझे यह गुरुभक्ति है शेष जो देना-लेना है यह तो सांसारिक व्यबहार है मगर मैं चार दिन के जीवन में आप लोगों की आँखों में मिट्टी डाल कर इस ख्याल से कि हां मैं तुम्हारे अन्दर प्रगत होता हूँ मैंने यह कर दिया मैंने यह कर दिया इस तरह से मैं किसी से पैसा लेना नहीं चाहता हूँ और न ही मुझे आवश्यकता है यह उपकार के विचार से जिसकी इच्छा हो दे। दाता दयाल का शब्द है—

गुरु तो तेरे पास फकीरा, गुरु तो तेरे पास
त्याग भ्रम विचार मन का, छोड़ जगत की आस।
आस कर गुरु चरण की, फल से होय निरास॥

अब देखो उन्होंने कोई झूठ तो नहीं बोला वो कहते हैं जो व्यक्ति सांसारिक आशाओं में फँसा हुआ है उसको तो शान्ति नसीब न

हो सकती हाँ आशायें पूरी हो सकती हैं अगर वह सुमिरन ध्यान करे तो। मगर वह कहते हैं आस गुरु के चरण की। गुरु के चरण है क्या ? दुनियां इन चरणों को पूजते पूजते मर गई मैं भी मर गया गुरु के चरण हैं प्रकाश यही राधास्वामी मत में राय साहिब सालिग्राम साहिब ने अपनी वाणी में लिखा है सतगुरु कौन ? सतगुरु केवल शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल उनके चरण प्रकाश। हम लोगों को इस बात का पता नहीं हम इन्हीं पैरों को पूज पूज कर मर गये और हम गुरुओं ने तुम लोगों को मूर्ख वनाया और अपना उल्लू सीधा किया—

तेरे मन में, तेरे मन में, तेरे सांसों सास

यह देखो ! वो कहते हैं गुरु तेरे मन में, तन में रहता है तू सांस लेता है तुम में है आप अगर अकल रखते हो तो सोचो कि वह कौनसी चीज हैं जो मेरी सांस में रहती है । अरे दिवाने तेरा अपना ही आप है मैं ही तो साँस लेता हूँ न। इस भ्रम में मैं भी दौड़ा करता था जिसकी तुम खोज करते फिरते हो तुम अपने ही भ्रम में अपनी ही तलाश करते फिरते हो संसार में। मगर यह इतनी ऊँची मंजिल है कि प्रत्येक व्यक्ति इसको नहीं समझ सकता। ऐ इन्सान। तेरी अपनी ही आत्मा तेरा गुरु है। तेरी अपनी ही आत्मा तेरा शिष्य है तू भ्रम में हैं सांसारिक इच्छायें और चाहें हैं इसलिए तेरी समझ में नहीं आता और तू भटकता फिरता है मैं भी बहुत भटका कोई चीज बाहर नहीं है—

गुरु बसे दिन रात प्यारे, धर चरन विश्वास।

वो कहते हैं तेरे भीतर २४ घण्टे गुरु बसता है मेरे अन्दर २४ घण्टे कौनसा गुरु बसता है ? मैं ही बसता हूँ और कौन होता है सोचो, मैंने यह कार्य केवल इसलिये किया है कि जिस तरह मैं मूर्ख बन कर अपने अज्ञान में अपनी दौलत लुटाई यह और बात थी कि दाता ने मुझे लूटा नहीं बरना मेरे लुटने में कोई कसर नहीं थी

रुपया किसी न किसी तरह मुझे वापिस लौटाया तो मैं भी चाहता हूँ कि तुम अज्ञान में लुटो नहीं खुशी से चाहे दो उसका कोई दुःख नहीं।

गुरु नहीं तीर्थ व्रत में, गुरु न योग अभ्यास।

वो कहते हैं कि तीर्थ में गुरू नहीं, व्रत में गुरू नहीं, तुम्हारे योग अभ्यास में भी गुरू नहीं तो फिर गुरु हुआ कौन ? तेरा अपना ही आप अपनी ही जात तेरी गुरू है अपने भ्रम में हम आप फँस कर शेर से गीदड़ और बकरी बन गये—

ढूंढ़ अपने हृदय में, अपने वहाँ है नित उनका बास।

मैंने हृदय में ढूंढा कैसे ढूंढा, सुमिरन किया, ध्यान किया, प्रकाश देखे जब से मन के रूप का पता लगा तो मैं उसको शरीर, मन और प्रकाश से परे ढूंढने के लिए मजबूर होगया वो जो चीज है वो गुरु है। वो कौन है ? वो मेरी जात है—

मैं आप रमा मैं खुद परवाना।
कोई कुछ समझे कोई कुछ समझे ।।

मगर कौनसी चीज है जो हमको गिराती है ? दुनियाँ की आशायें दौलत, इज्जत मान की भूख—

कर्म में माया रहे, व्यापे धर्म जम की फांस।
मन में अनवन देखी, मन में भ्रम था सन्यास ।।

इसको प्राप्त करने के लिए हम धर्म, कर्म करते हैं वो चीज तो हमारी जात थी भ्रम में आकर के हमने धर्म और कर्म किये। योग का अभ्यास किया—

तेरी चिन्ता गुरु को होगी क्यों है तुझको त्रास।

कहते हैं गुरू को तेरी चिन्ता होगी। मैं अपनी चिन्ता स्वयं ही तो करता था क्या कहूँ मेरी बात को समझने वाला कोई नहीं। हम किसी वस्तु को प्राप्त करते हैं गुरु ने क्या चिन्ता करनी है हम आप ही चिन्ता करते हैं ?

राधास्वामी चरन गह, अज्ञान का कर नास।

अज्ञान का नाश नहीं होता था इस अज्ञान का नाश करने के लिए मुझे यह काम दिया गया था, मैं गुरू हूँ न मैं महात्मा हूँ न मैं कुछ नहीं बना। बात मेरी समझ में आगई—

सन्तमत मारग झीना है, हां
संयम नियम जप तप कर्मा, नहीं किंचित कठिनाई।
सहजयोग की सहज रीति है, सहज ही सहज भलाई॥

जब बात समझ में आजाती है फिर ज्यादा अभ्यास करने की आवश्यकता नहीं रहती अब मैं ज्यादा अभ्यास क्या करूँ कुछ भी नहीं, अब अपने आपको खेंच कर अपने आप में ठहरा देता हूँ सबल होगया बात समझ में आगई—

सतगुरु सतनाम सतसंगत, समझ सहज में धारे।
सतगुरु सत्तनाम सतसंगत, समझ सहज में धारे।

इस बात की समझ सतगुरु उसकी संगत और नाम की प्राप्ति से मिलती है इसलिए जितनी महिमा है यह सतसंग की है—

फिर अन्तर में करे चढ़ाई, जड़, चेतन निरवारे।

जड़ चेतन की निरवार क्या है? हमारी जो अपनी सुरत है वही शरीर में आती है न तो उसमें फँस जाती है उससे लगाओ कर लेती है वो ग्रंथी बन जाती है जब ज्ञान और समझ आजाती है तो ग्रंथी खुल जाती है चेतन हमारा अपना रूप है, हम हैं। जब **Grossmater** में या मन के ख्यालात में हम आते हैं तो उसका सत समझ कर इसमें फँस जाते हैं वो गाँठ पड़ जाती है जैसे दो चीजों में गांठ डाल दें। ध्यान होगया तो गांठ खुल गई—

राधास्वामी ने भेद बताया, सुरत शब्द मत गाया।
सुरत शब्द मत का टीका, सुरत में सब को पाया॥

कहते हैं सुरत में शब्द को पाया। हम नहीं हम में से शब्द निकलता है। मैं कहा करता हूँ न कि हम जो हमारा अपना आप है

स से शब्द निकलता है, यही दाता ने कहा है यह सूक्ष्म विषय है सलिए वो कहते हैं कि सतसंग की महिमा है आप ग्रहस्थी हैं ापको आज जाने की आवश्यकता नहीं आपको दो चार बातें मैं मेशा बताता रहता हूँ कि सुवह शाम सुमिरन ध्यान किया करो पने मन का हमेशा अच्छा ख्याल दिया करो अपने दिल से किसी साथ घर में द्वेष नफरत, बुगज, हसद, कीना छोड़ दो। जब तुम भ्यास करोगे जैसी तुम्हारे भीतर की वासना है ध्यान करोगे हारी वह वासना पूरी हो जाएगी। लोगों की इस प्रकार से होती मेरी होती है और मैं हैरान होता हूँ मेरी अकल काम नहीं करती मेरी समझ में जो कुछ जाया मैंने बता दिया मैंने अपनी ओर मार्ग सुगम और साफ कर दिया कोई कठिनाई नहीं है मगर ायाँ सुगम को नहीं समझती एक कहावत मुझे याद है देहली में ीम अजमलखाँ थे उनके पास काबिल का कोई नबाव आया ार था, उन्होंने नबज देखी और तीन सौ रुपये की दवाई लिख । हकीम जी की आदत थी कि नमाज पढ़ने जाते तो रास्ते में ब लोग बैठ जाते उनकी नबज देखते जाते और किसी को दो की मूली के पत्ते और किसी को मामूली से नुक्से बता देते तो व भी गरीव बन कर आगे बैठ गया उसको भी बता दिया, ने कहा आपने पहचाना ? हकीम ने कहा पहचाना। आप नवाब स समय तो आपने ४०० रुपये का नुक्सा क्यों बताया ? उन्होंने तू अमीर था तुझे दो पैसे के नुक्से का विश्वास नहीं बैठना था नए यह बात आसान है मगर क्योंकि हमको बहुत से ख्यालात हुए हैं कि यह कठिन है वह यह है हम आसान बात पर यकीन करते वरना है आसान—

ओ बुलया खदा की पाऊना, ऐथो पुटनाते ऐथे लाना।

ारे दिल में आपके लिए दर्द रहती है मैं सच्चे दिल से चाहता ाता आपने यह कार्य सौंपा था मेरे पास क्या है मैं आप सबको

शुभ भावना देता हूं, आपका हितैषी हूँ आप दुखी आते हैं मैं चाहता हूँ दाता इनका दुख दूर हो जाये आप जिस इच्छा के लिए मेरे पास आते हैं आपकी इच्छा पूरी हो इसके सिवाय मेरे पास और कुछ नहीं न कुछ कर सकता हूँ आपका मन चाहे मेरे पास आओ जी चाहे न आओ बस यही कह सकता हूँ दूसरे जो अनुभव और समझ मैंने हासिल की है वो समझ देता हूँ दूसरे जो तुम लोग विश्वास करो तुम्हारे विश्वास में बहुत कुछ है तुम में बहुत कुछ है बाहर के गुरु की यही दया है कि वह हित देता है ज्ञान और समझ देता है सद्बुद्धि अर्थात सही रास्ता और सच्चा मार्ग बताता है मुश्किल को आसान कर देता है गुरु के पास सच्चाई, ज्ञान और हकीकत के लिए जाया जाता है तो उसके अज्ञान को नाश करके उसको अपने आप में ठहरा देता है अपनी इज्जत करनी आप सीखो सब कुछ तुम्हारे पास है केवल मन को सम्भालना है और कुछ नहीं मन के ठहरने से जो हमें अनुभव होता है, बोध होता है हम प्रायः उस अवस्था को ईश्वर, भगवान या मालिक समझ लेते हैं अपने रूप को आप पहचानो।

नोट—एक बच्चा है आप उसको देखना चाहते हैं उसको देखने से आपको खुशी प्राप्त होती है बच्चा तो आपको कुछ नहीं देता वो क्योंकि खुश है उसको देख कर तुम्हारे भीतर खुशी आती है इसी प्रकार किसी को मेरी संगत करने से मेरे दर्शन करने से मुझे मिलने और बातें करने से खुशी, सुख व शान्ति नहीं मिलती तो मेरा दोष आप लोगों का नहीं।

एक महिला यदि पति को कामातुर नहीं कर सकती तो महिला का दोष है मगर यदि पति ही निपुंसक है तो स्त्री क्या कर सकती इसलिए यहां अधिकारी होते हैं वहां सतसंग से स्वयं ही उनकी जिन्दगी बदल जाती है मेरा कर्तव्य है कि अपने आपको क्रियात्मक बनाना इसलिए मैं कोशिश करता हूँ कि अपने आपको ठीक करूं

ताकि मेरे जो मिलने वाले हैं वो अपने आप ठीक हो जायें। तुम खुश हो जो तुमको देखेगा वो खुशी प्राप्त करेगा तुम रोते रहते हो, दुखी होते हो जो भी देखेगा उसके भी दुख आएगा बस यही सत्संग है और कुछ नहीं।

पिंगल साखी

ध्यान मूलम गुरुमूर्त्ति, पूजा मूलम् गुरु पदम् ।
मंत्र मूलम् गुरुवाक्यम्, मोक्षमूलम् गुरु कृपा ॥

अर्थ—ध्यान का मूल गुरु की मूर्त्ति है, पूजा का मूल गुरु के चरन है, मंत्र का मूल गुरु वाक्य है और मोक्ष का मूल का मूल गुरु की कृपा है।

---

(१) स्मरण का अंग

सुमिरन सब का आदि है, सुमिरन सब का अन्त।
पिंगल जो सुमिरन करे, वही साध और सन्त ॥

सुमिरन सब का सार है, सतगुरु दिया बताय।
पिंगल जो सुमिरन करे, बिगड़ी लेय बनाय ॥

सुमिरन को चित दे नहीं, मन चंचल भरमाय।
पिंगल सो नर पातकी, कैसे गुरु को पाय ॥

सुमिरन चित्त लगाय दे, तन की सुध बिसराय।
पिंगल सुमिरन सहज से, अपना जन्म बनाय ॥

जो चाहे दीदार को, सुमिर सुमिर गुरु नाम।
पिंगल सुमिरन से मिले, मोक्ष अर्थ धन काम ॥

चार पदारथ हाथ में, आवें सुमिरन संग।
पिंगल सुमिरन के किये, लागे गुरु का रंग ॥

सुमिरन सुमिरन क्या करे, समझ न आई बात।
पिंगल सुमिरन क्यों बने, जब मन में उत्पात ॥

सुख दुख एक समान कर, चित की वृत्ती थाम।
पिंगल सुमिरन से मिले, सहजे ही गुरु नाम ॥

सुमिरन सब का मूल है, शाखा जप तप ध्यान।
पिंगल सुमिरन में रहे, शील संतोष की खान ॥

सुमिरन से मन लाइये, मान मोह को भूल।
पिंगल सुमिरन के किये, तन मन हों ज्यों फूल ॥

सुमिरन से मन लाइये, जैसे मणी भुजंग।
पिंगल मस्तक में रहे, कभी न हो चित भंग ॥

सुमिरन से मन लाइये, जैसे कामी काम।
पिंगल तू बिसरे नहीं, आठ पहर गुरु नाम ॥

सुमिरन से मन लाइये, घट का परदा खोल।
पिंगल मुख को बन्द कर, मुख को कबहुं न खोल ॥

सुमिरन से मन लाइये, आंख कान मुख बन्द।
पिंगल यों सुमिरन करे, काटे यम का फन्द ॥

तीन बन्द लगाय कर, सुमिरन से मन लाय।
पिंगल भव के तरन का, सुमिरन सुगम उपाय ॥

सुमिरन मुख से क्या करे, तोते की सी रट।
पिंगल यह सुमिरन नहीं दे बाहर के पट ॥

शब्द में सुरत पुरोय दे, यह सुमिरन सिद्धान्त ।
पिंगल इस बिधि आप ही, मन हो जाये शान्त ॥
पिंगल सब का सार है, सुमिरन सब का मूल ।
पिंगल सुमिरन से दुख जात है, सुमिरन से सुख होय ।
हिंगल सुमिरन सार को, बिरला जाने कोय ॥
जो सुमिरे सो निकट है, नहिं सुमिरे सो दूर ।
भूले लाखों कोस हैं, सुमिरे निकट हजूर ॥
सुमिरन कभी न भूलिये, सुमिर सुमिर गुरु नाम ।
पिंगल गुरु की दया से, पूरन हों सब काम ॥

---

(२) ध्यान का अंग

मूल ध्यान गुरु मूर्ती, मंत्र मूल गुरु शब्द ।
पिंगल मंत्र है बचन गुरु, पूजा मूल गुरु पद ॥
चिदाकाश गुरु मूर्ती- उज्ज्वल भान् समान ।
पिंगल कमलाकार चित, सदा उसी का ध्यान ॥
मस्तक गुरू बसाइये, हृदय गुरू का नाम ।
पिंगल इस विधि जो रहे, व्यापे मोह न काम ॥
मस्तक में जो गुरू नहीं, मन में नहीं गुरु ज्ञान ।
पिंगल वह नर जगत में, लहे पद निर्वान ॥
गुरु की आज्ञा में चले, पाले गुरु के बैन ।
पिंगल धन्य है वह पुरुष, पावे नित सुख चैन ॥
भूला जो गुरु वाक्य को. गया विवेक विचार ।
पिंगल सो जग में फँसा, व्याप रहा संसार ॥
सहजा बृती उत्तमा, मध्यम संयम ध्यान ।
पिंगल अधमाधम कहे, तीरथ बरत समान ॥
आँखों के स्थान पर, ध्यान धारना होय ।
पिंगल गुरु के रूप का, निश्चय दर्शन होय ॥